Members. Therefore, that is the stage, when Members who have given Amendments are called to move their Amendments, if they so desire. The sequence followed by the House today is, therefore, in order. The issue raised by Shri Digvijaya Singh *Ji* is not tenable. In case, ...*(Interruptions)*... Please take your seat. In case, hon. Member, Shri Digvijaya Singh*ji*, needs further clarification, he may kindly refer to the proceedings of the House, dated 07th February 2023, when the Motion of Thanks on the President's Address was taken up by the House last year; and, also peruse the practice detailed in the publication 'Rajya Sabha at Work' at pages 233 and 235. So, as per rule, as per practice, and as per practice during my tenure, the point raised by you was an intervention, not very wholesome. Thank you.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS - *Contd.*

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Sir, just one point. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No, Mr. Tiruchi Siva. No more discussion on that. I have concluded that issue. Nothing more on what I have ruled. ...*(Interruptions)*... Now, the Leader of the Opposition, Shri Mallikarjun Kharge.

विपक्ष के नेता (श्री मल्लिकार्जुन खरगे): सभापति महोदय, मैं महामहिम राष्ट्रपति के अभिभाषण पर अपने चार शब्द रखना चाहता हूं। पहली बार उन्होंने इस सदन में आकर ज्वाइंट सेशन को एड्रेस किया और चुनाव से पहले उन्होंने सारी बातें कहीं। मैं उनके अभिभाषण का स्वागत करता हूं और उसमें जो कमियां हैं, उन्हें आपके सामने बोलने की कोशिश करता हूं। आप और बीजेपी सरकार मुझे संयम से सुनेगी, यह मेरी आशा है।

महोदय, मोदी जी के 10 वर्ष के कार्यकाल में उनके कुछ सवाल भी थे कि किस तरह से पहले की सरकार ने काम नहीं किया, इस अर्थ में भी उनके शब्द थे। यह सरकार इतना अच्छा काम कर रही है, इसका भी ब्यौरा उन्होंने दिया।

महोदय, हिमांशु बाजपेयी एक कवि हैं, उन्होंने कुछ कहा था, मैं उनकी पंक्तियां पढ़ता हूं।

"न खाता, न बही है, जो तुम बोले वही सही है।
न्यूज़ ये छप रही है, सब कुछ बिल्कुल सही है।
सच पर एफआईआर क्यों, रासुका की मार क्यों,
झूठ की जय-जयकार क्यों, निष्ठुर है सरकार क्यों?
मेरे शहर के लोग, देश के लोग यह सवाल मुझसे पूछ रहे हैं।"

मैं यही पूछना चाहता हूं। एक तरफ तो आप अपनी बातों को बहुत से adjectives लगा कर यहां बोले। यह सही है कि हर सरकार अपनी बात को राष्ट्रपति जी के माध्यम से कहलाती है,

लेकिन इस राष्ट्र के जो निर्माता हैं, हमें उन्हें कभी नहीं भूलना चाहिए और समृद्धि की इस राह पर जाने के लिए सबको मिलकर काम करना है। महोदय, जब लोग देश के लोगों को ऊपर लाने की कोशिश करते हैं, तो उसमें सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा है। जब तक लोग शिक्षित नहीं होंगे और अपने हकों को नहीं जानेंगे, संविधान की रक्षा नहीं करेंगे...। तब तक गरीबों को इसका फल नहीं मिलेगा, * को नहीं मिलेगा, निचले वर्गों को नहीं मिलेगा और कमजोर तबके के लोगों को नहीं मिलेगा। इसलिए आजादी के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने यही काम किया। उन्होंने शिक्षा के लिए प्रथम स्थान दिया। उन्होंने अपनी योजनाओं में primary schools से लेकर high schools, colleges, IIT institutions खोले और ये institutions देश के vision बने। जब हम देश के लिए एक vision बनाकर चलते हैं, तो वह बहुत दिन चलता है, लेकिन जब उसको छोड़कर सिर्फ अपने ही काम पर लग जाते हैं, तो बहुत मुश्किल हो जाता है और देश पीछे जाता है। चाहे education हो, technical education हो, medical college हो, engineering college हो या AIIMS हो, इनका लाभ सबको मिलना चाहिए। संविधान में Scheduled Castes, Scheduled Tribes और OBCs के लिए भी reservation बनाया गया है। आज OBC के बच्चों को 27 per cent reservation मिलना चाहिए, लेकिन वह नहीं मिल रहा है। किसी कारणवश वे घट जाते हैं। SCs/STs के लिए भी ऐसे ही होता है। कई जगह reservation को घटाने को कोशिश चल रही है, जैसेकि qualification बढ़ाना, experience बढ़ाना या age को बढ़ाना। इन सारी चीजों को लाकर SC/ST/OBC के बच्चों को कैसे काटा जाए, यह चंद लोग सोचते हैं और कोई भी सरकार इसकी जांच नहीं करती है। उनके लिए कोशिश नहीं करती है, तो यह हमारे देश के लिए बहुत बड़ा नुकसान है। खासकर scholarship में - जो scholarship उनको regularly Social Justice Department से मिलनी चाहिए, वह भी नहीं मिल रही है। वे देरी से जाते हैं, तो वे बोलते हैं कि जब तक यहां आपके पैसे भरे नहीं जाते, तब तक हम आपको एडमिशन नहीं दे सकते हैं या एक-दो महीने होने के बाद आपकी scholarship नहीं आई, इसलिए यहां पर जगह नहीं है। ये जो चीज़ें हैं, इन चीजों को मैं आपके सामने लाना चाहता हूं। पहले से ही समाज में यह मानसिकता है, मोदी जी आए, इसलिए ऐसा हुआ, यह नहीं बोलता हूं। यह समाज की एक मानसिकता है, चाहे धार्मिक मानसिकता बोलो या ऊपर-नीचे का बोलो, यह सब में है, लेकिन मुझे समझ में नहीं आ रहा कि एक आदमी, जो पहले कांग्रेस में थे, अब चीफ मिनिस्टर बने, आजकल वे आपके बहुत लाड़ले बन रहे हैं। उनका कहना है - मैं यह दावे से कहता हूं कि उन्होंने बाद में उसको किस ढंग से समाज में कहा, मालूम नहीं। मेरे उच्चारण में कम-ज्यादा हो सकता है। जितना मोदी जी संस्कृत में बोलते हैं, उसमें बोलने में मुझे थोड़ी तकलीफ होगी, लेकिन फिर भी आपको और जनता को समझाने के लिए...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Khargeji, you are aware that when we refer to a constitutional office in this House, you will keep that rule in mind also.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: What, Sir?

---

* Expunged as ordered by the Chair.

MR. CHAIRMAN: You will keep in mind the rule how and under what circumstances, we raise issues about a constitutional office order. Bear that in mind.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, मुझे सिखाने की जरूरत नहीं है, मैं 11 साल किया हूं। सर, ठीक है।

MR. CHAIRMAN: Please bear that in mind.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे :

"कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्।।"

इसका मतलब है कि खेती, गाय पालन और व्यापार करना, यह वैश्यों का दायित्व है। * ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Hon. Khargeji, I take exception to this. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, मैं किसी का नाम नहीं ले रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: This will not go on record.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Why?...*(Interruptions)*... Why? ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Because you are not following the rules. ...*(Interruptions)*...

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: This is said by Dr. Babasaheb Ambedkar in the *Samvidhan*. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Rules do not allow you unless you authenticate it. ...*(Interruptions)*... No. ...*(Interruptions)*...

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: You can read it. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: I request you ... ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, यह क्यों नहीं जाएगा? ... (**व्यवधान**)...

---

* Not recorded.

MR. CHAIRMAN: How can it be done? It is contrary to the rules. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, ... (**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: There is no notice to me. ...*(Interruptions)*... You have to give notice to me. ...*(Interruptions)*...

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: It is in public domain. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No, no. ...*(Interruptions)*... Please take your seat. ...*(Interruptions)*... I again appeal to you, follow the rules. You have a great experience. ...*(Interruptions)*... I acknowledge your experience. ...*(Interruptions)*... Please. Please. ...*(Interruptions)*... Don't get into that mode. ...*(Interruptions)*... Don't get into that mode. ...*(Interruptions)*... Please. Please.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: I have not named. I have not said anything. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please. Please.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: I am appealing to the Prime Minister: *

MR. CHAIRMAN: This will not go on record. ...*(Interruptions)*... This will not go on record.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, ... (**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: This will not go on record. Go ahead.

SOME HON. MEMBERS: Why?

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Why? Tell me why, Sir? ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Yes, it is a good question. It is a good question. I will respond. Rules do not permit it. As simple as that. ...*(Interruptions)*... Please continue. ...*(Interruptions)*...

---

* Not recorded.

SHRI MUKUL BALKRISHNA WASNIK (Rajasthan): Which rule has been violated, Sir? He is talking about the condition of ... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Does he need your support? ...*(Interruptions)*... He is Leader of the Opposition. ...*(Interruptions)*...

SHRI MUKUL BALKRISHNA WASNIK: He is talking about someone ... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: He doesn't need your support. ...*(Interruptions)*... Come on. ...(*Interruptions*)... Khargeji, keep your flock in order. Let them take their seat and you speak. ...*(Interruptions)*...

SHRI MUKUL BALKRISHNA WASNIK: Sir, which rule has been violated? ...*(Interruptions)*...

DR. ABHISHEK MANU SINGHVI (West Bengal): Sir, Mr. Kharge needs nobody's support. But I want to say a sentence here. ...*(Interruptions)*... He has not named anybody. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Dr., most of the time when legal issues are there, you are absent. ...*(Interruptions)*...

DR. ABHISHEK MANU SINGHVI: And the person concerned is not... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: You are absent whenever we need you. ...*(Interruptions)*...

SHRI DIGVIJAYA SINGH: And it attracts the SC/ST Atrocities Act also. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Khargeji, have you finished?

SHRI MALLIKARJUN KARGE: Finished!

MR. CHAIRMAN: Then continue, please. Then, please continue.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, अगर आप यही चाहते हैं, तो खत्म करो।

MR. CHAIRMAN: No, no, please continue. Please continue.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : सर, मैं मन की बात इसलिए बोल रहा हूं, क्योंकि हमको दर्द होता है। जब ऐसे लोग सरकार में होते हैं, कुर्सी पर बैठकर ऐसी बात करते हैं। आज भी संविधान लागू होने के बाद, आजादी मिलने के बाद और आजादी मिलने के 78 साल होने के बाद और संविधान लागू होने के 75 साल के बाद भी, अगर इस तरह की मानसिकता लोगों में है, तो शूद्र लोग कैसे आगे आएंगे, आप बता दीजिए। आप बता दीजिए। ऐसा ही यूनिवर्सिटीज़ में होता है, ऐसा ही हाई प्रोफाइल स्कूल-कॉलेजेज़ में होता है। वहां पर उनको एडमिशन क्यों नहीं देते हैं? क्योंकि उनके पास पैसा नहीं होता है। आप बड़े-बड़े स्कूल-कॉलेज खोलते जा रहे हैं। आप स्कूल खोलिए, यह अच्छी बात है, लेकिन इनको भी एडमिशन दीजिए। आप उनको यह मत बोलिए कि आपका काम सिर्फ सेवा करना है, आपका काम दूसरा नहीं है। आप पढ़ नहीं सकते, लिख नहीं सकते, देश के लिए लड़ नहीं सकते। आपने कांट्रैक्ट लिया है, तो दूसरों को भी उसमें शामिल कीजिए। आज मैं आपसे यही पूछने के लिए यहाँ खड़ा हुआ हूं, क्योंकि आज प्रधान मंत्री जी भी यहाँ हैं, वे इसके बारे में सोचेंगे, कम से कम बाद में अपने चीफ मिनिस्टर्स को बुलाकर यह कहेंगे कि ऐसी बात मत करो, इससे मेरी बदनामी तो होगी ही होगी, लेकिन तुम भी जनता की आँखों से गिर जाओगे।

महोदय, दूसरी बात स्किल डेवलेपमेंट ग्रेजुएट्स की है। 2022 के सरकारी आंकड़ों के हिसाब से बेरोज़गारी 13.04 परसेंट और फीमेल ग्रेजुएट्स की संख्या 20.06 परसेंट है। अगर एजेंसियों के आंकड़े देखें, तो स्थिति और भी खतरनाक है। इस बेरोज़गारी के कारण चाहे लोग लिखे-पढ़े भी हों, तब भी आज युवाओं को नौकरी नहीं मिल रही है।

महोदय, अनएम्प्लॉयमेंट का एक बहुत बड़ा मुद्दा है, इसकी तरफ आपको ध्यान देना चाहिए था, आपने उस पर क्या किया, इसको बताइए। आपने उसके विषय में कुछ नहीं कहा है। आप युवाओं को अपने भाषणों से आकर्षित करते हैं कि यहाँ जाओ, फॉरेन जाओ। आप कहीं-कहीं जाते हैं, हर जगह जाते हैं, इसलिए अपने भाषणों से उनको आकर्षित करते हैं, लेकिन वह बेचारा भूखे पेट आपका भाषण क्या सुनेगा! उसका पेट भूखा है, बेरोज़गारी है, वह आपका भाषण क्या सुनेगा! इस बेरोजगारी के लिए आपने क्या किया - यह हमारा सवाल है, लेकिन इसमें उसका कोई जिक्र नहीं है। मैं एक उदारहण देता हूं कि महाराष्ट्र में, जहाँ से हमारे लीडर ऑफ दि हाउस आते हैं, वहाँ 4500 वैकेंसीज़ के लिए 10 लाख एप्लिकेशन्स आईं और उसमें एमबीए, इंजीनियरिंग के लोग शामिल हैं। आप देखिए कि हम रोज-ब-रोज कितने कमज़ोर बनते जा रहे हैं।

महोदय, दूसरी बात यह है - आपने देखा होगा, प्राइम मिनिस्टर ने भी देखा होगा - खास कर हमारे बीजेपी प्रेज़िडेंट के स्टेट से, हिमाचल प्रदेश से, हरियाणा से, यूपी के बॉर्डर से बहुत लोग मिलिट्री फौज़ में जाते हैं। इज़रायल की एक एजेंसी ने जब एप्लिकेशन्स मंगाई, तो हमारा युवा कहता है कि यहाँ बेरोज़गार रहने से अच्छा तो मैं इज़रायल नें काम करते हुए मरना पसंद करूंगा। यहाँ का यूथ ऐसा बोलता है और जहाँ बमबारी हो रही है, वहाँ पर जाने के लिए तैयार है। यूपी का यूथ यह कहता है कि अगर मुझे यहाँ अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी मिल जाए, तो कभी इज़रायल नहीं जाऊंगा। यह मैं नहीं कह रहा हूं, यह जनता कह रही है, युवा कह

रहे हैं। आप जो इनकी बात करते हैं, उस पर मैं कहना चाहता हूं कि आप Public sectors भी खत्म कर रहे हैं, जबकि Public sectors are most important for the reserved classes. वह एससी हो, एसटी हो, ओबीसी हो या economically weaker sections हों, आप जो इन Public sectors को एक के बाद एक खत्म कर रहे हैं, उससे नौकरियाँ भी खत्म हो रही हैं। मैं सभी कुछ मिलाकर बोलता हूं कि चाहे रेलवे हो, चाहे पोस्ट ऑफिस हो, चाहे पुलिस हो, चाहे केंद्रीय विद्यालय हो, चाहे सैंट्रल यूनिवर्सिटीज़ हों, चाहे aided institutions plus Government institutions हों, यदि इन सभी को मिलाएं, तो इनमें आज करीब 30 लाख वैकेंसीज़ हैं। आप 10-12 हज़ार लोगों को रिक्रूट करते हैं और उनकी नियुक्ति हमारे प्राइम मिनिस्टर के हाथ से दिलाते हैं। यह एक रुटीन कोर्स है, इसको कोई अंडर सेक्रेटरी या कोई डिप्टी सेक्रेटरी भी दे सकता है, लेकिन मैंने दो-चार दफा देखा है कि वे नौकरियों को हमारे प्रधान मंत्री जी के हाथ से दे रहे हैं। नौकरियां देनी हैं, तो एक बार इसकी मुहिम करो, 30 लाख लोगों को भर्ती करो, जितने चाहे उतने सर्टिफिकेट बांटो, हम कहेंगे कि यह ठीक है। लेकिन 30-30 लाख वेकेन्सीज़ खाली हैं और हम उसको नज़रअंदाज कर रहे हैं। दूसरी चीज़, एम्स में भी बहुत सी वेकेन्सीज़ खाली हैं। मैं इसके बारे में पूरा बोलते जाऊं, तो भाषण बहुत लंबा हो जाएगा। इसीलिए मैं इसकी परसेंटेज बोलूंगा। आज एम्स का वेकेन्सी रेट 41 परसेंट है। बीस में से सात अस्पतालों में स्टाफ की कमी है। आपने कहा कि हमने एम्स खोले, दूसरे इंस्टिट्यूशन्स, हॉस्पिटल्स आदि बनाए। उन्होंने अपने भाषण में बहुत लंबी-चौड़ी बातें कहीं। लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि जहां जरूरी है, वहां आप क्यों नहीं देते हैं? मैंने कहा कि आर्टिकल 371जे, यह स्पेशल आर्टिकल सिर्फ हैदराबाद, कर्णाटक के लिए लागू है। वह आखिरी अमेंडमेंट हम लाए थे। जब हमने कोशिश की और सब लोगों ने सपोर्ट किया था। उसमें जेटली जी भी थे, बीएसपी आदि सभी पार्टी के लोगों ने unanimously उस अमेंडमेंट को सपोर्ट किया। मैं उसको यहां पर याद करता हूं। मैंने आपसे दो बार पूछा। नहीं-नहीं... वह जमीन नहीं... नहीं साहब, वह जमीन तो ईएसआई की है, गवर्नमेंट की है और अगर वहां एम्स खोलेंगे, तो entire backward-class area कवर हो जाएगा, लेकिन आपने उसमें इंटरेस्ट नहीं लिया। आपने ऊपर से देखा होगा, क्योंकि आपका विमान एक-दो बार वहीं से गुजरा था और 15 दिन पहले भी आप गुलबर्गा में अपनी कांस्टिट्यूएंसी में उतरे। खैर, अभी वह मेरी कांस्टिट्यूएंसी नहीं रही, वह आपकी कांस्टिट्यूएंसी है। आप वहां उतरे, लेकिन कोई फायदा नहीं है। उसमें रेलवे के काम भी रुक गए, एम्स बनाने के काम रुक गए। बातें तो बहुत से भाषणों में होती हैं, लेकिन ये कार्य नहीं हो रहे हैं। मैं इसके लिए भी आपसे निवेदन करता हूं कि इधर देख लीजिए। अब आखिरी स्टेज में निवेदन करके भी क्या फायदा है, कल देखेंगे कि क्या होगा और उसके बाद बात करेंगे। लेकिन मैं आपको यह याद दिला रहा हूं, पहले की बातें भी याद दिला रहा हूं और आगे आने वाली सरकार, चाहे कोई भी आए, हम आएं या आप आएं, उनके लिए भी सोचने का यह एक रास्ता है कि बैकवर्ड एरिया में किन-किन चीज़ों को आज ...(**व्यवधान**)... क्या कहा...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please continue. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः ऐसा होता है कि जब मोदी साहब आते हैं, ये बहुत एक्टिव हो जाते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : खरगे जी ...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः मोदी साहब आते हैं, तो उनके साथ ही पीछे आते हैं। कोई बैठता नहीं है। आप पार्लियामेंट में देखिए, यहां भी देखिए...

MR. CHAIRMAN: Kharge *ji*, everyone is listening to you.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः आप चले जाएं, तो दो मिनट में पूरा खाली...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please continue. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः साहब, आप मत जाओ। उनके मेम्बर्स जाएंगे, लेकिन मेरी स्पीच पूरी होने तक आप मत जाओ।

सर, मैं प्राइवेट सेक्टर की बात भी कहता हूं। यह एक बहुत बड़ी चोट गरीबों को लग रही है। प्राइवेट सेक्टर में क्या होता है - जो प्राइवेट सेक्टर्स बनाते हैं, उनके लिए सरकार की हर मदद होती है। सरकार उनको जमीन देती है, लाइट देती है, पानी देती है, लेकिन वे हमारे रूल्स और रेगुलेशन्स को नहीं मानते हैं, क्योंकि अब प्राइवेट सेक्टर से ही देश बना है, ऐसी कल्पना चंद लोगों की है। पब्लिक सेक्टर पहले आया, तभी देश का सुधार हुआ। आज प्राइवेट सेक्टर हमारे बैंक्स से पैसा लेते हैं, हमारी इलेक्ट्रिसिटी यूज़ करते हैं और हमारी जमीन लेकर भी ये गरीबों को नहीं लेते हैं। सिर्फ अपने रिश्तेदारों और अपनी कम्युनिटी के लोगों को लेते हैं। बाकी के लोगों को डेली वेजेज़ पर, कॉन्ट्रेक्ट बेसिस पर लेते हैं। उनको एक दिन की रोटी भी नहीं मिलती है। यह प्राइवेट सेक्टर का हाल है। हमने माना है कि इस देश की एक नीति बनी हुई थी - प्राइवेट सेक्टर, पब्लिक सेक्टर, ज्वाइंट सेक्टर और को-ऑपरेटिव सेक्टर। सभी सेक्टर्स हैं, लेकिन इस सेक्टर में ज्यादा फायदेमंद यह पब्लिक सेक्टर है। आज पब्लिक सेक्टर धड़ाधड़ बंद हो रहा है। कोई पूछने वाला नहीं है। पहले ट्रेड यूनियन वाले भी बड़े एक्टिव रहते थे। हमारे जमाने में थोड़ा कुछ हुआ, तो सब लोग झंडा लेकर आ जाते थे। अब वे भी किधर गए, मालूम नहीं हो रहा है। इसलिए आप प्राइवेट सेक्टर के ऊपर यह जो ज्यादा जोर दे रहे हैं, उसके बजाय आप पब्लिक सेक्टर पर जोर दीजिए, पब्लिक सेक्टर की मदद कीजिए, उसको जिंदा कीजिए, रिज्यूवेनेट कीजिए। अगर उसमें कुछ कमियाँ हैं, तो आप इंटेलिजेंट लोगों को डाल कर उसको बढ़ाइए। उसके बजाय आप उसको खत्म मत करिए। सर, अगर मुझे खाँसी आई, जुकाम आया या कुछ आया, तो जुकाम आया, इसलिए नाक काट लो, क्या ऐसा होता है? आप उसकी दवा ढूँढ़िए। पब्लिक सेक्टर गरीबों के लिए और देश के लिए भी अच्छा है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि उसके बारे में भी कुछ नहीं बताया गया।

अग्निपथ योजना - यह आपकी एक बहुत प्रिय योजना है। आपने यह योजना 4 साल के लिए की है, लेकिन लोग यह समझे कि जैसे कि हर जगह स्टाइपेंडरी के बाद वे परमानेंट हो जाते हैं, वैसे ही यह जो अग्निवीर योजना है, इस 4 साल की नौकरी के बाद हम मिलिट्री में जाएँगे। वे भरी जवानी में जाते हैं। पहले कहा गया, एक बात आ गई कि 100 लोगों में से 25 लोगों को ड्रॉप किया जाएगा और 75 लोगों को उसमें शामिल किया जाएगा, लेकिन आज स्थिति यह है कि आप 75 लोगों को ड्रॉप कर रहे हैं और 25 लोगों को ले रहे हैं। मैं ऑथेंटिक बोल रहा हूँ, चाहे यह स्टेटमेंट अभी बाहर आया कि नहीं, हाल ही में जनरल एम.एम. नरवणे ने बताया कि अग्निवीर स्कीम सिर्फ आर्मी के लिए आनी थी तथा उसमें 75 परसेंट रिटेंशन और 25 परसेंट रिलीज़ पॉलिसी का प्लान था, लेकिन बिना किसी से बात किए, सलाह किए मोदी जी ने एक स्कीम एयर फोर्स और नेवी पर लागू की तथा इसमें 25 परसेंट रिटेंशन और 75 परसेंट रिलीज़ पॉलिसी का रूल बना। अब आप बोलिए, यह तो मेरी स्टेटमेंट नहीं है। वहाँ जो काम करते थे, वहाँ जो जनरल थे, वैसे लोग बोल रहे हैं। यह जो आप कह रहे हैं, इससे अग्निवीर के लोग परेशान हैं। वे यह कह रहे हैं कि बेहतर दिनों की आस लगाते हुए, यानी आपने जो अच्छे दिन बोला, जैसा प्राइम मिनिस्टर साहब बोलते थे - अच्छे दिन, ये अच्छे दिन!

"बेहतर दिनों की आस लगाते हुए 'हबीब',
हम बेहतरीन दिन भी गँवाते चले गए।"

यानी उनके जो बेहतरीन दिन थे, जो जवानी थी, वह भी लुट गई, खराब हो गई। उनको 4 साल बाद जाना पड़ा।

यह एक तरफ है और दूसरी तरफ महँगाई है। महँगाई की मार तो आप जानते हैं, क्योंकि आप किसान हैं, वकील हैं, घर भी देखते हैं, आपको तो बहुत मालूम है, लेकिन आप मुझे थोड़ा सा समय दे दीजिए। देखिए, छोटी-छोटी चीजें हैं। आप बोलेंगे कि यह क्या है? टमाटर, प्याज, दूध, ग्राउंडनट, ऑयल, आटा, चावल के दाम दोगुने हो गए। घटा नहीं, डबल हो गया। अरहर ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: It is on a point of fact. ...*(Interruptions)*...

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI PIYUSH GOYAL): Sir, kindly ask him to authenticate and table the comment and statement which he has made about all these products. It is completely baseless. इसका कोई आधार नहीं है। निराधार स्टेटमेंट के ऊपर आप न बोलें। ...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: ठीक है। जब आपकी बारी बाती है, तो..

MR. CHAIRMAN: Kharge ji, since the Leader of the House has raised a point, I would urge you to kindly authenticate the assertion that you have made. There should not be any difficulty.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: अगर आप बाजार में गए होते, तो मालूम होता। एक बार तो दिल्ली की सरकार को प्याज के लिए खींचा गया, उसको हराया गया। मैं आपके सामने यह ला रहा हूँ कि..

MR. CHAIRMAN: Kharge ji, please authenticate the assertions that you are making with respect to the issues raised by the Leader of the House. There should not be any difficulty.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, मैं और गोयल साहब बाजार में जाएँगे और वहाँ से हम दोनों authenticate करके लाएँगे। ठीक है।

MR. CHAIRMAN: This may be done during the course of the day. ...(Interruptions)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : नहीं, नहीं।

MR. CHAIRMAN: During the course of the day, authentication may take place.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: नहीं। मैं जब चाहूँगा, तब हम जाएँगे। अरहर दाल, जो पहले 70 रुपये की थी, आज 150 रुपये की हो गयी है। क्या इसे भी authenticate करना है?

MR. CHAIRMAN: Obviously.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: चना दाल का दाम 49 रुपये से 85 रुपये हो गया। वनस्पति का दाम 75 था, अब 125 हो गया। सरकार बोलती है, मगर महँगाई पर कहीं नहीं बोले। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में भी नहीं बोले। इधर सिंगल डिजिट में ग्रोथ हो रही है, लेकिन डबल डिजिट में महँगाई हो रही है, तो यह कैसे चलेगा? ...(**व्यवधान**)... क्या आपको फ्री मिल रहा है? ...(**व्यवधान**)... ठीक है, उनको सरकार सप्लाई करती होगी। हमारे प्रधान मंत्री जी उनको कोई स्पेशल सब्सिडी देते होंगे, तो उनको फ्री मिल रहा है।

अब किसानों की बात है। किसानों की आर्थिक स्थिति के बारे में आपने कहा। किसानों ने आन्दोलन किया। आन्दोलन के बाद आप कुछ कानून लाये थे। आप जो कानून लाये थे, किसानों ने उनका विरोध किया और तीनों काले कानूनों को आपको वापस लेना पड़ा। आपने उनकी इनकम डबल करने का वायदा किया था। उसको डबल करने के साथ ही आपने एमएसपी बढ़ाने का भी वायदा किया था। आज किसानों की आमदनी में, रीयल इनकम में सालाना 1.5 परसेंट की गिरावट है, इंक्रीज नहीं है। अब हकीकत में अनुमान देखें, तो 2016-17 और 2020-21 के बीच की प्रति किसान रीयल इनकम में सालाना 1.5 परसेंट की गिरावट आयी है। सरकार का कहना है कि किसान बहुत सुखी है, लेकिन सच्चाई यह है कि पिछले 5 वर्षों में कृषि के बजट में 1 लाख करोड़ से भी अधिक का बजट सरेंडर किया गया है। ...(**व्यवधान**)... पीएम साहब बोले कि किसानों के कायाकल्प की गारंटी है, उसमें माल की कितनी ढुलाई हुई, वे लेकर गए, तो कितना फायदा

मिला, ये सब बातें वे करते हैं। वे सब कौन हैं? ये बीच में जो बिचौलिये हैं, एजेंट्स हैं, उनका माल गया, किसानों का माल नहीं गया। उन्होंने जो खरीदा, वही भेजा। जब वह माल गया, तब फायदा तो उनको हुआ। छोटे-मोटे लोगों को, पैसेंजर ट्रेनों में या स्लो पैसेंजर ट्रेनों में डाल कर एक मार्केट से दूसरे मार्केट में अगर किसानों को माल ले जाने की इजाजत देते, तब हम कहते कि उनका फायदा हुआ। लेकिन एक दूसरी योजना भी फेल हुई। आपकी दूसरी एक योजना, 'पीएम फसल बीमा योजना' है। वह भी फेल हो गई। 'पीएम फसल बीमा योजना' में 2021-22 तक कुल 2,761 करोड़ रुपए पेंडिंग क्लेम्स में बकाया हैं। हमारे पास भी पहले यह था। आप देखेंगे, तो पाएँगे कि इससे सिर्फ एजेंट्स को फायदा होता है। बीमा योजना के जो एजेन्ट्स हैं, ये लोग उसमें सौ कंडीशन्स डाल देते हैं, ताकि उसको कुछ मिले ही नहीं। वह इंस्टॉलमेंट भर देता है और बाद में जब क्लेम करने जाता है, तो उसको यह बोला जाता है कि इसमें ये-ये कमियाँ हैं। एजेंट्स उसको कांट-छांट कर देने की कोशिश करते हैं। सर, क्या यह भी आपको लाइक नहीं है?

MR. CHAIRMAN: All I am telling is, the time was 27 minutes, and now it has been 36 minutes.

SHRI PRAMOD TIWARI (Rajasthan): Sir, it is one hour and 42 minutes. अगर एलओपी बोल रहे हैं, तो 1.42 ऑवर्स के अंदर ही बोल रहे हैं।

MR. CHAIRMAN: Okay, fine.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, इतना गुस्सा क्यों?

श्री सभापतिः मैं कहाँ गुस्सा कर रहा हूँ, देखिए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः योजना शुरू होने के बाद 2 करोड़, 33 लाख किसानों को इस योजना से निकाल दिया गया। वे इस योजना से निकल गए। सरकार ने किसानों को 6 हजार रुपए सालाना देना शुरू किया, यानी 16 रुपए प्रति परिवार प्रति दिन, जबकि ढाबे में 16 रुपए में दो कप चाय भी नहीं मिलती है। ऐसी योजना बनाई जाती है, जिसका लाभ जिनको अच्छे तरीके से मिलना चाहिए, उनको वह लाभ नहीं मिलता है। इस तरह से यह भी फेल्योर है।

आप देखेंगे, तो पाएँगे कि 40 परसेंट से अधिक किसानों को 'पीएम फसल बीमा योजना' से बाहर निकलना पड़ा और सबका साथ, सबका विकास और क्या? इस तरह से उनके दो-चार कोटेशन्स हैं। क्या विश्वास है, क्या * है - यह मालूम नहीं है। साथ के प्रयास अच्छे रहते हैं, कोटेशन्स ठीक हैं।

सभापति महोदय, सामाजिक न्याय के तहत हमारी माँग जाति जनगणना की है। इसमें कोई पॉलिटिक्स नहीं है। हम इसकी माँग इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि अगर जाति जनगणना कराई

* Expunged as ordered by the Chair.

जाए, तो उससे ये सब कुछ पता चल जाएगा कि किस-किस कम्युनिटी, किस-किस जाति में कितने ग्रैजुएट हैं, नौकरी में कितने हैं, जमीन कितनी है, कौन क्या काम करता है, कौन कितनी गायें पालते हैं, एजुकेशन कितनी हुई है - यह सब कुछ पता चल जाएगा। आप उसके आधार पर स्कीम बना सकते हैं। उनके लिए आप आर्थिक योजना बना सकते हैं। हमारी जाति जनगणना की जो माँग है, वह कोई पॉलिटिक्स करने के लिए नहीं है। आप इस पर फिर से सोच लीजिए। अगर आप इसको नहीं करेंगे, तो हम आने के बाद इसको जरूर करेंगे, पक्का करेंगे।...(**व्यवधान**)... सर, मैं यह बोल रहा हूँ कि उनको इसके बारे में सोचना चाहिए और जल्दी ही इसके बारे में निर्णय लेना चाहिए। जातीय जनगणना की माँग हर स्टेट में है, हर बैकवर्ड की यह माँग है, हर गरीब की यह माँग है, निचले तबके की माँग है, देश की जनता की यह माँग है। जो सामाजिक न्याय में विश्वास रखते हैं, वे जरूर इसको मानेंगे। इससे इकोनॉमिक एक्स-रे मिलता है। हम तो इनकम बढ़ाने के लिए, वेलफेयर के लिए इतना कुछ कर रहे हैं। ये सारी चीजें कर रहे हैं। जाति जनगणना का लाभ सबको होगा और सभी लोग इससे फायदे में रहेंगे।

दूसरी बात यह है कि शेड्यूल्ड कास्ट के ऊपर इतना अन्याय होता है। मुझे यह भी मालूम है, मैं conscious हूँ। 10-20 साल के आँकड़े निकाल कर ये कहते हैं कि तुम्हारी सरकार ने क्या किया, 70 साल में क्या हुआ, तुम कहाँ थे? यही सब बातें आएँगी, लेकिन फिर भी मैं बोलना चाहता हूँ।

सर, इस देश में हर दो घंटे में एससी-एसटी समुदाय के पाँच लोग अपराध का शिकार क्यों होते हैं? दो घंटे में पाँच लोग! वर्ष 2022 में महिलाओं की लेबर फोर्स में भागीदारी 23.7 परसेंट थी, जबकि महिलाओं की देश में भागीदारी 50 परसेंट है, इसलिए हम चाहते हैं कि उन्हें लेबर फोर्स में भी 50 परसेंट हिस्सा मिलना चाहिए और उसके लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के ऊपर अत्याचार होते हैं। आपको तो मालूम है कि जो लोग ओलम्पिक में कुश्ती खेलकर मेडल्स जीतकर आए थे, उनको न्याय नहीं मिला और जो अपराधी था, उसको सभी लोग प्रोटेक्ट करते रहे। उस वक्त प्रधान मंत्री जी ने भी बात नहीं की, वे अपना मुँह बंद करके बैठे रहे। वे ऐसे वक्त ही बात नहीं करते हैं। जब शेड्यूल्ड कास्ट के ऊपर अन्याय होता है, ओबीसी के ऊपर अन्याय होता है, महिलाओं के ऊपर अत्याचार होता है, तब उन पर वे कुछ बात नहीं करते हैं। उनके बाकी के जो विशेष विषय हैं, जिन पर वे बोलना चाहते हैं, उन पर घंटों बोलते हैं, लेकिन जब मणिपुर में दंगा होता है, तो उसके बारे में वे एक लफ्ज़ भी नहीं बोलते हैं। जब वे दूसरे-दूसरे विषय पर इतनी अच्छी बातें करते हैं, तो मणिपुर पर क्यों नहीं? वे वहाँ जाते क्यों नहीं हैं? यह मेरा सवाल है। यह तो आप नहीं पूछ सकते हैं, वे लोग पूछ नहीं सकते हैं, फिर मुझे तो पूछना चाहिए न!

सर, मैं आपको भी बताना चाहूँगा कि बिलकिस बानो के मामले में दोषियों को माला क्यों पहनाई गई? अब बोलिए, ऐसा हो सकता है? गुजरात में सबको माला पहनाई, सबको स्वीट्स खिलाई, जश्न मनाया, जबकि झगड़ा बिलकिस बानो और बीजेपी का था। यह भी कोई बात है! ऐसे इश्यूज़ पर प्रधान मंत्री जी को condemn करना चाहिए, वह भी तब, जब यह इश्यू उनकी स्टेट का है। अगर वे condemn नहीं करें तो कौन कर सकते हैं? आपके पास तो किसी और की बात चलती ही नहीं! आप ही सरदार हो, दूसरे लोग आपको क्या कह सकते हैं, फॉलो नहीं करेंगे तो सीधा घर जाएँगे। यह तो आपने कई लोगों को बता दिया है, तो वे लोग गुपचुप चले जाते हैं।

सर, उनको यह भी मालूम है, चाहे वह बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में आईटी सेल के बलात्कार का केस हो और सरकार को उन 34 लाख महिलाओं को भी जवाब देना है, जिनके ऊपर आज इतने अत्याचार हुए। यह भी आपको बताना चाहिए।

सर, एक और बात है। मैं यह बार-बार इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि उनको इम्प्रेस करने के लिए उनकी पार्टी में कैसे-कैसे लोग हैं और आप उनको प्रोटेक्शन कैसे देते हैं। वे तो प्रमुख हैं। मैंने देखा कि प्रधान मंत्री जी जब राम मंदिर में पूजा कर रहे थे या प्रतिष्ठान कर रहे थे तो उस वक्त आपकी बाजू में आरएसएस के प्रमुख मोहन भागवत बैठे थे। वे भी साधु हैं, संत हैं, मुझे मालूम है। वे वहाँ बैठे थे। वर्ष 2019 के चुनावों के बाद उन्होंने कहा कि एससी, एसटी, ओबीसी को दिए गए आरक्षण पर बहस होनी चाहिए, समीक्षा होनी चाहिए। क्या आप यह चाहते हैं? ऐसे लोग आपके साथ बैठकर जब ऐसा करते हैं ...(**व्यवधान**)... वे झारखंड में बोले थे। ...(**व्यवधान**)... उन्होंने 2015 में ऐसा ही बयान दिया। फिर भारी विरोध के बाद वे पलट गए, प्रधान मंत्री जी ने इस पर एक शब्द नहीं बोला, उन्होंने मौन व्रत रखा, जैसे उन्होंने राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के वक्त मौन व्रत रखा था। बीजेपी ने उसके ऊपर बताया कि सरकार के एक्शंस साफ बताते हैं कि वे आरक्षण को खत्म करना चाहते हैं, लेकिन इसमें immediately सरकार का रिएक्शन होना चाहिए था। यूजीसी ने हाल ही में एक गाइडलाइन निकाली, फिर वह पलट गई। यूजीसी ने हाल में एक ड्राफ्ट गाइडलाइंस निकाली, जिसमें हायर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन में रिज़र्व्ड कैटेगरी के उम्मीदवारों की वैकेंसी में डीरिज़र्वेशन और आरक्षित उम्मीदवार उपलब्ध नहीं होने पर जनरल कैटेगरी से उम्मीदवार भरे जा रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... आप बैठिए। आपको तो सब कुछ मिलता है, जिनको कुछ नहीं मिलता मैं उनकी बात कर रहा हूं। Please don't interfere.

MR. CHAIRMAN: Khargeji, please control.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, वे आरक्षण से वंचित हैं। आप यूजीसी से कहिए। दूसरी जगह तो temporary भर रहे हैं। अगर कोई रिज़र्व कैंडिडेट नहीं मिलता है, तब तक backlog को complete डीरिज़र्व करने की बजाय थोड़े दिन के लिए स्टाइपेंड पर लैक्चरर्स को काम चलाने के लिए temporary ले सकते हैं, लेकिन वह नहीं है, बस निकालो - इनके सिर काटो, इनको दबाओ। यही इनका उसूल है, इसी के लिए ये काम करते हैं।

महोदय, ये विमेन रिज़र्वेशन का * दावा करते हैं। हमेशा विमेन को 50 परसेंट रिज़र्वेशन देने की बात कहते हैं। अगर आप देंगे, तो जब सुप्रीम कोर्ट में एक पीआईएल दाखिल हुई थी और सुप्रीम कोर्ट ने एक आदेश दिया था कि जल्द से जल्द यह होना चाहिए, फिर क्यों आपने उसका काउन्टर एफिडेविट डाला? आपको उन्हें लेना था। आपके पास तो इतना बहुमत है। पहले 330-334 सीट्स थीं, अब तो दावा 400 पार का हो रहा है। ...(**व्यवधान**)... सर, मेरा दावा है, इनको चुनकर आने दीजिए, तब पता चलेगा। ये सब मोदी की कृपा से आए हैं और तालियां बजा रहे हैं। हमने एमएलए का चुनाव लड़ा, एमपी का लड़ा और अंत में राज्य सभा में चुन कर आए

* Expunged as ordered by the Chair.

हैं। यहां के लोग तो मोदी जी के आशीर्वाद से आए हैं और आने के बाद उनका काम है, सीट को थप-थप बजाना।

MR. CHAIRMAN: The Leader of the House wants to make a lighter observation.

श्री पीयूष गोयल: महोदय, माननीय खरगे जी ने आज वाकई में सत्य कहा और सत्य के अलावा कुछ नहीं कहा, उसको prove कर दिया।

MR. CHAIRMAN: I think never has a Leader of Opposition been so applauded. It is a record. आपके बयान की इतनी तारीफ की जा रही है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : सर, मेरे बयान की तारीफ है, मैं वह भी समझता हूं। ये अपने लिए ढोल बजा रहे हैं। 400 आएंगे, 500 आएंगे। अगर इतने मेम्बर्स आने हैं, तो ये सब काम क्यों नहीं कर रहे हैं? इस बार आप 100 भी पार नहीं कर सकेंगे। इंडिया स्ट्रॉन्ग है। ...(**व्यवधान**)... फिर से बोलो, इंडिया कमज़ोर है। सर, क्या इंडिया कमज़ोर है? मैं आपसे पूछता हूं कि क्या इंडिया कमज़ोर है?

MR. CHAIRMAN: Now, The Leader of the House.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: हर बात को compound करना, I don't like this. *...(Interruptions)...* I don't like this. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: The Leader of the House. *...(Interruptions)...*

श्री पीयूष गोयल: सर, रोज एक-एक साथी I.N.D.I. Alliance छोड़कर जा रहा है।...(**व्यवधान**)... मुझे यह पता भी नहीं है कि I.N.D.I. Alliance है या नहीं है। किस रूप में है, जरा वह भी बताएं।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: आप बैठिए और बार-बार उठिए मत।

श्री सभापति: खरगे जी, वे मेरी इजाज़त से उठते हैं। When I permit him, he rises. *...(Interruptions)...* When I permit, he rises.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Sir, he rises there, लेकिन मुझे मालूम है कि जब मोदी साहब present रहते हैं, तो सभी आगे बढ़कर मदद करने के लिए तैयार रहते हैं, मैं उसको मानता हूं। इसलिए मेरी आदत है और प्रधान मंत्री जी को भी मालूम है कि मैं एक बार House में आता हूं और बैठा रहता हूं और सबकी बात सुनता हूं। इस बार थोड़ा कम बैठा, लेकिन always मैं House में जब तक पार्लियामेंट में था, तब भी बैठता था और अभी भी बैठता हूं। ये लोग जो बार-बार उठते हैं, तो उनकी कुर्सी पर sticker लगाइए। वे बार-बार उठते रहते हैं। उन्हें spring वाली कुर्सी दे दीजिए।

श्री सभापतिः मेरे लिए समस्या हो जाएगी। मुझे कई लोगों की कुर्सी पर लगाना पड़ेगा। मेरे लिए बहुत बड़ी समस्या हो जाएगी।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: नहीं, नहीं। यह एक experiment कीजिए, उसके बाद देखेंगे।

MR. CHAIRMAN: Please continue.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : देखिए, यह जो women's reservation है, उसको भी लाने से आप डर गए। क्यों डर गए, अब मुझे मालूम हुआ, क्योंकि आपकी नीति ही ऐसी है। *...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Khargeji, this will not go on record. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : ये मेरे नहीं, नर-नारी ये सब...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: One second. ...*(Interruptions)*... One second. ...*(Interruptions)*... The Leader of the House. ...*(Interruptions)*...

श्री पीयूष गोयलः सर, हमने बहुत tolerate किया। ये बार-बार भारत का अपमान कर रहे हैं, महिलाओं का अपमान कर रहे हैं और यहां तक कि इनकी शब्दावली भी ठीक नहीं है। फिर भी हमने tolerate किया। जब इन्होंने ** जैसा शब्द इस्तेमाल किया, हमें लगा कि हम अभी disturb न करें, लेकिन ये बार-बार इस प्रकार का बयान देकर फिर वही मानसिकता दिखा रहे हैं, जिसकी आज सुबह भी चर्चा हुई। इनकी divisive tendencies जिस प्रकार से समाज को बांटना चाहती हैं, ये देश को बांटना चाहते हैं, ये बार-बार इसका साइन देते हैं।...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please. ...*(Interruptions)*... I urge you to.....*(Interruptions)*...

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: No, no. ...*(Interruptions)*... Sir, I am here. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: आप यह तो जानते होंगे कि "ढोर, गंवार, शूद्र, पशु नारी, ये सब ताड़ना के अधिकारी" हैं। इनके बारे में तो सुना होगा। आपके पास ऐसे-ऐसे शब्द हैं। इस समाज को कुचलने की, इस समाज को तोड़ने की, इस समाज को शिक्षा से वंचित करने की, इस समाज को

---

* Not recorded.

** Expunged as ordered by the Chair.

शास्त्र से वंचित करने की आपकी tendency है, हमारी नहीं है। यदि हमें कुछ नहीं मिला, तो भी इस देश के साथ हैं, कुछ मिला, तो भी इस देश के साथ हैं। आप हमें कितनी भी तकलीफ दें, हम कभी अलग जाने के बारे में नहीं सोचेंगे और न ही जाएंगे। आप सब लोग खाकर पेट भर कर बैठे हैं, फिर भी इनके बारे में नहीं सोचते हैं, यही बहुत बड़ा दुख है।

सर, मैं एक बात और कहूंगा कि यह चुनावी प्रक्रिया है। जिस तरह सरकार CEC की नियुक्ति नियंत्रित कर रही है, उससे चुनाव आयोग की स्वतंत्रता खतरे में है। Model Code of Conduct ये सब जो आते हैं, तो समय पर जो होना है, वह नहीं हो रहा है। इसलिए नहीं होता है, क्योंकि अलग-अलग ढंग से अलग-अलग राज्यों में चुनाव हो जाते हैं। मैंने हाल ही में सुना है कि एक Returning Officer ने चंडीगढ़ में आठ मेम्बर्स के वोट रिजेक्ट कर दिए। सर, eight members, ऐसे कैसे हो सकता है? 35 लोगों में से आठ मेम्बर्स का रिजेक्ट हो गया।

श्री सभापतिः कितनों का होना चाहिए?

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : सर, rules के मुताबिक होना चाहिए।

श्री सभापति : रूल्स के मुताबिक होना चाहिए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : यह न हो कि बीजेपी को इलेक्ट करने के लिए सभी को निकाल दो। जैसे कि बिल पास करने के लिए 147 लोगों को बाहर निकाल दिया और बिल पास हो गए। ...(**व्यवधान**)... सर, मैं बताना चाहता हूं कि बीईएल में चार प्राइवेट मेम्बर्स डायरेक्टर बनाये हैं। बीईएल में ईवीएम की मैन्युफैक्चरिंग होती है, उसमें चार प्राइवेट मेम्बर्स डायरेक्टर बनाये हैं, जिनके पास कारखाने का कोई एक्सपीरियेंस नहीं है। ऐसे लोग उसमें घुस गये हैं और उसमें घुस जाने के बाद ये लोग क्या-क्या करते हैं, यह मालूम नहीं है, सरकार ने कैसे उनको वहां पर डायरेक्टर बनाया है? ...(**व्यवधान**)...

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS; THE MINISTER OF COAL; AND THE MINISTER OF MINES (SHRI PRALHAD JOSHI): Sir, it has not been... ...*(Interruptions)*... Everywhere, there is an Independent Director. ...*(Interruptions)*... Sir, what is.... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Come on. ...*(Interruptions)*... What do you have to say? ...*(Interruptions)*... Now, the Parliamentary Affairs Minister. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRALHAD JOSHI: Sir, according to the company law....

MR. CHAIRMAN: Please. ...*(Interruptions)*... Mr. Javadekar. ...*(Interruptions)*... Yes, Mr. Joshi.

SHRI PRALHAD JOSHI: Sir, Kharge*ji* is a very senior Member. मैं आपसे इतना ही निवेदन करता हूं कि पूरे देश में एक कानून है, उस कानून के हिसाब से हरेक कम्पनी में, लिमिटेड कम्पनी में Independent Directors nominate होता है, उसका appointment होता है, यह simple procedure है। यह procedural aspect है। खरगे साहब, ऐसा हरेक कम्पनी में होता है। कृपया आप बिना basis के allegations नहीं लगाइए।

MR. CHAIRMAN: Now, hon. Leader of the Opposition.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, बिना basis के उनको डाला है, नॉन ऑफिशियल को डाला है। ऐसा होता है, यह ठीक है। लेकिन एक ही पार्टी के, उनकी कोई qualification appropriate नहीं है, ऐसे लोगों को, आर.एस.एस. के लोगों को चुन-चुनकर डालना जरूरी है क्या? ...(**व्यवधान**)... देखिए, जोशी साहब, आप बात मत करो, मुझे सब मालूम है। आपके सब ज्वाइंट सेक्रेटरी यहां पर बैठे हैं।

MR. CHAIRMAN: Kharge*ji*. ***...(Interruptions)...*** Hon. Leader of the Opposition, through me. ***...(Interruptions)...*** I am looking at you and you are looking at him.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, आप ज्यादा उधर देखते हैं, इधर नहीं देखते हैं।

श्री सभापतिः आज तो मैं पूरा आपको ही देख रहा हूं।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः नहीं सर। आपके नहीं देखने की वजह से मेरी यह हालत हो गई है। सर, एक बात और कहनी है। यहां पर चीन के बारे में कुछ नहीं कहा गया। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में कहा गया है कि हमारी सेनाएं जैसे को तैसा की नीति के साथ जवाब दे रही हैं। सच्चाई यह है कि हम अपनी ज़मीन चीन के कब्जे में छोड़ते जा रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... यह सब अभी एक वीडियो में सामने आया है। इसी महीने चीन के PLA सैनिकों ने पेट्रोलिंग प्वाइंट 35 एंड 36 के पास चारागाह क्षेत्र में एक भारतीय चरवाहे को जाने से रोका। अभी बॉर्डर पर ऐसी स्थिति है। अगर इसको नहीं रोक पाए, तो वे और अंदर आते जाएंगे, जिसके कारण बहुत बड़ा झगड़ा होता रहता है और वहां पर शांति नहीं रहेगी। हमारे द्वारा विश्व की रक्षा करने की बात हो रही है और हम लोग विश्व गुरु बनने जा रहे हैं। यह कब होगा, कैसे होगा, उसको देखेंगे। हम कब विश्व गुरु हो रहे हैं? आप विश्व गुरु हो जाओ, लेकिन पहले चीन को अपनी सीमा के अंदर मत घुसने दो, पहले पाकिस्तान को आने मत दो। पहले तो भारत में गुरु बनो, फिर विश्व गुरु बनने के बारे में सोचो। अब तो राम टैम्पल के पुजारी बने हैं। Thank you very much. आप के दर्शन किए तो राम के दर्शन हो गए। राम के पुजारी तो पहले आप बने हैं, ठीक है। ...(**व्यवधान**)... आप हमको तो अंदर भी नहीं आने देते हो, पुजारी क्या बनाओगे? चलो छोड़ो, इस बात को मत करो।

सर, मणिपुर में जो घटना घटी, अब तक आप वहां पर विजिट क्यों नहीं कर रहे हैं, क्या secret है? ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः सर, वह तो आप कह चुके हैं। यह पेपर हो गया है। आप कह चुके हैं। आप मणिपुर को cover कर चुके हैं।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, वह खत्म हो गया।

श्री सभापति : आप मणिपुर को cover कर चुके हैं।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, मैं अभी मणिपुर पर आया हूं। यह बीस है या इक्कीस है, मैं अपने पेपर के बारे में अच्छी तरह से जानता हूं।

श्री सभापति : वह कवर हो गया है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: क्या आप चाहते हैं कि मैं एक बार फिर उनको पुजारी बनाऊं? छोड़िए। ..(**व्यवधान**).. सर, मेरा एक और निवेदन है कि इतने महीनों के बाद भी आप मणिपुर visit नहीं कर रहे हैं। इसका क्या secret है? वहाँ पर लोग तबाह हो रहे हैं, वे तंग हैं, बरबाद हो रहे हैं, उनके घर जल रहे हैं, उनकी मोटर साइकिल्स जल रही हैं और वे एक-दूसरे को मार रहे हैं, लेकिन आप कहते हैं कि शांति है। वहाँ पर परसों ही दो लोग मारे गए हैं। नैक्सलिज्म खत्म हो गया है, जबकि दूसरी ओर तीन दिन पहले छत्तीसगढ़ में दो लोग मारे गए हैं। आप बोलते हैं एक। होता है एक, लेकिन उसको इतनी जोर से डिफेंड करते हैं कि मैं आपसे क्या बोलूं कि * ...(**व्यवधान**).. सर, पिछले दस सालों में एक-एक करके फेडरल स्ट्रक्चर को ..(**व्यवधान**)..

श्री सभापति : एक मिनट खरगे जी।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः ठीक है - असत्य। वे असत्य को सत्य करने में प्रवीण हैं। अब हो गया? जो हिंदी मुझे आती है, मैं उसमें बदलाव कर रहा हूं। सर, फेडरल स्ट्रक्चर पर कहूं तो जिस-जिस स्टेट में बाढ़ आई, आपने वहाँ पैसे रिलीज़ नहीं किए, कर्णाटक के आधे भाग में जहाँ ड्राउट है, आपने वहाँ पर भी पैसे नहीं दिए, आप बंगाल में नरेगा का पैसा रिलीज़ नहीं कर हैं, आंध्र प्रदेश में दस साल से स्पेशल कैटेगिरी की मांग हो रही है, आप उस पर कुछ नहीं कर रहे हैं। आंध्र प्रदेश के लोग विशाखापट्टनम स्टील प्लांट का प्राइवेटाइजेशन मत करो, इसको पब्लिक सैक्टर में रखो की बात कह रहे हैं, क्योंकि इससे देश का बहुत बड़ा नुकसान होगा। अगर आप इसको पब्लिक सैक्टर रखेंगे, तो इससे गरीबों का फायदा होगा, लेकिन अगर किसी प्राइवेट हाथों में दे दिया, तो उन्हें वहाँ नौकरी भी नहीं मिलेगी, सिर्फ प्राइवेट लोगों को फायदा होगा और दलित, एससी, एसटी

* Expunged as ordered by the Chair.

आदि सब मर जाएंगे। इनमें कम से कम रिज़र्वेशन तो है, ऐसी जगह पर उन्हें कुछ न कुछ मिलता है, लेकिन यदि आपकी ऐसी इच्छा है कि एससी, एसटी, बैकवर्ड क्लास को मर जाने दो, कुछ भी होने दो, तो एक न एक दिन 'इंकलाब ज़िंदाबाद' आएगा, क्योंकि एक दिन लोगों की टौलरेंस खत्म होती है। वे देखते है और देख-देख कर एकदम उठते हैं।

महोदय, नीति आयोग के एक सीईओ हैं, उनके वक्त में ही उनका एपोइंटमेंट हुआ था। उन्होंने भी यही कहा था, उन्होंने भी भाजपा सरकार के एंटी फेडरल तरीकों का सच बताया था। फाइनेंस कमीशन का हिस्सा कम करने का किस ढंग से दबाव आता है, उसके बारे में भी परसों के पेपर में आया है, आपने पढ़ा होगा, क्योंकि आप हर चीज़ बहुत बारीकी से देखते हैं, इसलिए मैं समझता हूं कि आपने इसको भी अवश्य देखा होगा।

महोदय, मोदी जी द्वारा दस सालों में 142 योजनाएं शुरू की गईं। मैं Annexure-II में देखता हूं।

श्री पीयूष गोयल : शायद स्पीच राइटर अटैच करना भूल गया होगा। ... ..(**व्यवधान**)..

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: प्रधान मंत्री जी द्वारा पिछले दस वर्षों में लगभग 142 योजनाएं शुरू की गई हैं। इनमें से लगभग 20 योजनाएं पीएम प्रिफिक्स के साथ हैं। ...(**व्यवधान**)... उस वक्त बोलने में क्या आप सो गए थे? मैं अब जाग रहा हूं, मैं बोल रहा हूं। ...(**व्यवधान**)... आप चुप बैठिए।

श्री सभापति : प्लीज़...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : प्रधान मंत्री जी द्वारा पिछले दस वर्षों में लगभग 142 योजनाओं की शुरुआत की गई। इनमें से लगभग 20 योजनाएं पीएम प्रिफिक्स के साथ हैं, जैसे कि पीएम किसान योजना, पीएम आवास योजना, पीएम फसल बीमा योजना और भी पीएम, पीएम, पीएम है...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please. ...(*Interruptions*)... The Parliamentary Affairs Minister wants to say something. ...(*Interruptions*)... Yes, Prahlad Joshi.

श्री प्रहलाद जोशी: सर, इनकी प्रॉब्लम क्या है? ...(**व्यवधान**)... इनके दस वर्ष में पीएम शब्द से इनकी सारी पार्टी और इनके मुखिया को भी एलर्जी थी। They were allergic to the word 'PM'. That is why they never used to keep the name of the PM. Only one family का नाम रखते थे ...(**व्यवधान**)... अब हम पीएम नाम रख रहे हैं, तो क्या आपको पीएम शब्द से एलर्जी है? ...(**व्यवधान**)... इनको इतना तो जानना चाहिए कि पीएम तो देश के हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: It is a good point.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : वे प्राइम मिनिस्टर को legal aid दे रहे हैं, उनको देने दो। सर, ये विकसित भारत की बात करते हैं, लेकिन अगर समाज विकसित होगा, तभी भारत विकसित होगा। यह मैं इसलिए बोल रहा हूं, क्योंकि मैं-मैं बोलना बड़ा मुश्किल है, यह अच्छा भी नहीं लगता। अब 10 साल हो गए हैं। सर, आप और हम यहीं राज्य सभा में रहेंगे, क्योंकि बाकी लोगों को तो इधर-उधर जाना पड़ता है। 1,500 specially equipped vehicles को देश के लगभग 2 लाख, 50 हज़ार विलेजेज़ में भेजा जा रहा है, जिन पर लिखा गया है - मोदी सरकार की गारंटी। आप पीएम की गारंटी बोलिए, इसमें मोदी की गारंटी क्यों लिखा है, क्योंकि वे इलेक्शन के लिए जा रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... आप और भी सुनते जाओ। ये जो गाड़ियां जा रही हैं, उनके अलावा मोदी जी ने अपनी गारंटी के बारे में बहुत कहा। आज तो न्यूज़पेपर में आता है, आप कोई सा भी न्यूज़पेपर निकालिए - मैं भी 8-10 पेपर देखता हूं, उसमें खास तौर से एडिटोरियल और बीच में जो लिखा होता है, उतना देखता हूं और बाकी के झंझट में नहीं जाता हूं - लेकिन मैं देखता हूं कि ऊपर लिखा हुआ होता है, मोदी जी की यह गारंटी, गैस की गारंटी, उसकी गारंटी, ऐसा उसमें रोज आता है और हम रोज देखते हैं। ...(**व्यवधान**)... आपके पास खूब पैसे हैं, जितना करना है, आप करिए, लेकिन कुछ होने वाला नहीं है, इंडिया जीतेगा। सर, मेरी गारंटी ...(**व्यवधान**)... आप सुनिए, मोदी साहब क्या कहते हैं, वह तो सुनो।

श्री सभापति : प्लीज़, खरगे जी...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : सर, मोदी जी क्या कहते हैं, वह तो आप सुनिए। मेरी गारंटी मेरी कड़ी मेहनत है - इनकी नहीं है, इनकी है - और दृढ़ता का प्रतिबिंब है। मोदी जी खुद के बारे में बताते हैं। यह उन्होंने कहा है, यह सभी पेपर्स में भी है। मोदी जी कहते हैं - जब भी उम्मीद खत्म होती है, मोदी की गारंटी शुरू हो जाती है। ...(**व्यवधान**)... आप सुन लो। मोदी जी ने कहा कि उनकी गारंटी का मतलब है कि वे अकेले ही उन्हें पूरा कर सकते हैं। ...(**व्यवधान**)... आप लोग हे - हे क्या कर रहे हो, आप डेमोक्रेसी में हो। एक अकेला इंसान प्रधान मंत्री मैं-मैं कह रहा है और तुम ढोल बजा रहे हो। ...(**व्यवधान**)...मोदी जी ने वाराणसी में कहा कि मोदी की गारंटी सुपरहिट होगी। ...(**व्यवधान**)... और इसी तरीके से ...(**व्यवधान**)... देखिए, ये लोग गड़बड़ कर रहे हैं, लेकिन प्राइम मिनिस्टर के भाषण करते वक्त जब हम करेंगे, तो आप हमें रोकना नहीं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: एक सेकंड। खरगे जी, आपके भाषण को इतना शांत रूप से सुना गया है और अभी से आप कह रहे हैं कि यह मत करना। ...(**व्यवधान**)... This is unfortunate, ...(Interruptions)... This is unfortunate. The Leader of the Opposition ...(Interruptions)... one second, Shaktisinh*ji*, do not shout, take your seat. Khargeji, you have been heard in rapt attention. आपने थोड़ा प्रोवोक किया, तो उन्होंने कुछ रिएक्ट किया। ...(**व्यवधान**)... आप थोड़ा मानिए। आप मेरी बात कभी माना करिए, प्लीज़। मुझे तो डर यह लग रहा है कि आप एनेक्सचर-2 तो पढ़ रहे हैं, लेकिन एनेक्सचर-1 भूल गए। वह आएगा, तो फिर और लंबा हो जाएगा।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: नहीं, नहीं, मेरे पास पूरे पेपर्स हैं, भूलने का सवाल ही नहीं है।

श्री सभापति : आपने एनेक्सचर-2, एनेक्सचर-1 कह दिया।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: मैं खुद ही मेहनत करता हूँ, मैं देखता हूँ और रखता हूँ। अगर आपको नहीं मिलता है, तो वह बात अलग है।

MR. CHAIRMAN: Please conclude now.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : आप क्या बोल रहे हैं? बोलिए।

MR. CHAIRMAN: Khargeji, you have taken one hour and five minutes.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: I have got one hour and forty minutes.

MR. CHAIRMAN: Yes, you have. You can take the entire time, no issues.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, मैंने फैक्ट्स चेक किए कि प्रेसिडेंट के एड्रेस में उन्होंने क्या कहा, उसको मैं थोड़ा आपके सामने रखूँगा। अभिभाषण में कहा गया कि 2014 के मुकाबले में एयरपोर्ट्स डबल हुए, 74 से बढ़ कर 149 हुए। ...(**व्यवधान**)... आप सुनिए। ...(**व्यवधान**)... आप आगे सुनिए। अब इसमें दो चीजें हैं। पहला, 2014 में कुल 94 ऑपरेशनल एयरपोर्ट्स थे, लोक सभा स्टार्ड क्वेश्चन नं. 113 में 12 दिसंबर, 2014 -- 149 बताए जा रहे हैं -- इसमें 9 हेलिपोर्ट्स और 2 वाटर एयरोड्रोम्स हैं और राज्य सभा के अनस्टार्ड क्वेश्चन में भी यही कहा गया। आपने यह क्या मुद्दा रखा है कि 149 हुए, यह सत्य से दूर है। यह आपने ही दिया है। अगर यह असत्य है, तो आपके ऑफिस की गलती है, आप ठीक करिए और अगर यह सही है, जो मैं मान रहा हूँ, तो ठीक बोलिए।

एक और बात है। मैं एम्स के बारे में बार-बार नहीं बोलूँगा, यह आप सबको मालूम है। फिर मैंने उसका ज़िक्र भी किया, कम से कम प्राइम मिनिस्टर ने सुना होगा, क्योंकि वे बार-बार गुलबर्गा आते हैं। वे वहाँ पर उतरते भी हैं, जाते भी हैं, घूमते-फिरते भी हैं, हर कॉन्स्टिट्युएंसी में जाते हैं। उनको वहाँ से बहुत प्रेम है।

दूसरी चीज, 1949 से लेकर अब मैं आपको तीन कॉलम में बताऊँगा कि आपने कांग्रेस पार्टी को नीचा दिखाने के लिए, नेहरू जी को बार-बार नीचा दिखाने के लिए बहुत सी बातें बोलीं और नेहरू जी ने जो काम किया, उसके बारे में आपने कभी प्रशंसा नहीं की, जो देश के लिए जेल गए, देश के लिए लड़े, आजादी के लिए लड़े और जिन्होंने पंचवर्षीय योजना की नींव डाली, डेमोक्रेसी के लिए जिन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर किया। अगर कोई अपोज़िशन का भी था, तो वे उनको इज्जत देते थे, लेकिन आप क्या कर रहे हैं, आप उनकी सत्यता को छिपाने की बात करते हैं। सर, 1951 में literacy rate 18.3 per cent था, जो 2013-14 में 74 परसेंट हुआ। यह आज कितना है - 77 परसेंट। ...(**व्यवधान**)... नहीं, नहीं। अगर टीका भी करना है, तो आप हमारे भी statistics

पढ़ते जाइए। आप ऐसा कीजिए। यह डेमोक्रेसी है, आप हमारी भी कमियाँ निकालिए, लेकिन सिर्फ जेलसी से बात मत कीजिए। बगैर सोचे-समझे टीका मत कीजिए। नेहरू जी के बारे में - यह नेहरू जी के जमाने की बात है। आप life expectancy की बात देखिए। सर, अगर हम उस वक्त पैदा होते, तो हमारी और आपकी life expectancy सिर्फ 32 years होती, आपकी एज 70 के ऊपर नहीं बढ़ती, मेरी 80 के ऊपर नहीं बढ़ती। उनकी भी 71 तक आयी है। यह नहीं बढ़ती। यह 70 साल तक बढ़ी। यह life expectancy 32 years से बढ़ कर 70 years हुई। अब आपके जमाने में life expectancy 69.27 years हो गई। आप बताइए। यह 9 महीने कम हो गई। दूसरी चीज़ infant mortality की है। 1951 के पहले यह 165 deaths per thousand थी। 2013-14 में 38 deaths per thousand हो गयी, तो यह घटी या बढ़ी? आपके जमाने में यह rate 29 तक आया। इसे 38 तक लाने के बाद भी कहा जाता है कि उस सरकार ने क्या किया! ये सब कुछ किया। प्राइमरी स्कूल्स 1951 से पहले 2 लाख 9 हजार थे और 2013-14 तक 7 लाख 90 हजार स्कूल्स बने। आपके जमाने में स्कूल्स कम हो गए, इसलिए क्योंकि आपने प्राइवेट को ज्यादा प्रोत्साहन दिया और 2021 में ये 7.6 लाख हो गए। Upper primary schools पहले 13,600 थे, 2013-14 में ये 4 लाख हुए और 2023 में 4 लाख 35 हजार हुए। Secondary higher inter junior colleges पहले 7,400 थे, हमारे जमाने में 2014 में 2 लाख 34 हजार हुए, अब 2 लाख 92 हजार हुए। Before 1950, 630 कॉलेजेज़ थे और 2014 तक 36,639 कॉलेजेज़ हुए। ये बढ़े या घटे? आप सब लोग जानते हैं। आप मैथेमेटिक्स में भी बहुत होशियार हैं। उसके बाद अब ये 43,000 हो गए। Sub centres, primary health centres पहले 725 थे, 2014 तक 1 लाख 77 हजार हुए और अब 1 लाख 94 हजार हुए। **...(व्यवधान)...** पहले 1 लाख 77 हजार थे। 2024 में 1 लाख 94 हजार हो गए। यानी ये लगभग डेढ़-दो हजार बढ़ गए। Net irrigated area - यह किसानों से सम्बन्धित बात है। पहले यह 210 लाख हेक्टेयर था और हमारे जमाने में 2013-14 में 680 लाख हेक्टेयर हुआ। यह बढ़ा या घटा? फिर आपके जमाने में यह 715 लाख हेक्टेयर हो गया। **...(व्यवधान)...** आपने कुछ नहीं किया - हमने ये काम किये, वह मैं बता रहा हूँ और आपने क्या किया, वह भी बता रहा हूँ। Percentage of rural households - यह पहले 2.2 परसेंट था, 2014 में यह 83 परसेंट था। अब आपने 12 परसेंट बढ़ाया। 2019 में, 99 परसेंट, figure as it is है। यह अपनी अचीवमेंट है, क्या आप इसको भी कंडेम करते हैं? ये आँकड़े हैं। इनको आप मिटा नहीं सकते हैं।...(**व्यवधान**)... आप दूसरी चीजों को मिटा सकते हैं, लेकिन इन चीजों को नहीं मिटा सकते हैं। आप 2021 का सेंसस क्यों नहीं करवा रहे हैं? अभी 2011 के सेंसस का डेटा है। आप 2021 का सेंसस करवा कर उसका डेटा क्यों नहीं ला रहे हैं? अगर आप इसको लाएँगे, तो आपको मालूम हो जाएगा कि कितने लोग लिटरेट हैं, हम कितना आगे आए हैं, कितनी ग्रोथ है? आपको इससे ये सारी चीजें मालूम हो जाएँगी। आप इसको 10 साल में क्यों नहीं कर रहे हैं? आप बाकी सारी चीजें करते हैं, लेकिन यह इसलिए नहीं करते हैं, क्योंकि इससे आपकी पोल खुल जाएगी। अगर 2021 का सेंसस होगा और उसका डेटा आएगा, तो सारी सच्चाई सामने आ जाएगी। जब सारी सच्चाई सामने आएगी, तो इससे आपकी पोल खुल जाएगी। महोदय, मैं यह बात इसलिए रख रहा हूँ कि कुछ नहीं किया - आप यह मत बोलिए। हमने इतना कुछ किया है, इसलिए डेमोक्रसी आज देश में जिंदा है और आप भी हैं, नहीं तो आपके पास डेमोक्रसी को बरबाद करने वाले बहुत लोग थे। वे सब ब्रिटिशर्स के पास नौकरी के लिए चले गए थे।...(**व्यवधान**)...

सर, अब मैं इन्वेस्टमेंट की बात करता हूँ। यूपीए के जमाने में नेट फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट 1,087.6 परसेंट था और इस सरकार के काल में यह 426.2 परसेंट है।...(**व्यवधान**)... कृपया पहले आप सुन लीजिए, उसके बाद बोलिएगा।...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : खरगे जी, कृपया आप जरा फॉरेन इन्वेस्टमेंट के बारे में फिगर बताइए।

श्री मल्लिकर्जुन खरगे : सर, नेट फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट, यानी बाहर का जो इन्वेस्टमेंट आता है।

श्री सभापतिः आप यह बताइए कि यह पहले कितना था और अब कितना है?

श्री मल्लिकर्जुन खरगेः सर, मैं वही बता रहा हूँ। यूपीए काल में यह 1087.6 परसेंट था और अब यह 426 परसेंट है।...(**व्यवधान**)... आप यह कह दीजिए कि यह गलत है।...(**व्यवधान**)... दूसरा, ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट 302.3 परसेंट था और अब यह 142 परसेंट है। पर कैपिटा जीडीपी 244.7 परसेंट था और वह अब 119 परसेंट है। ये जो आँकड़े हैं, इसको आप देख सकते हैं। मैं इसको आपके सामने रख रहा हूँ।

श्री सभापति : आप इसको रख दीजिएगा। यह ठीक रहेगा।

श्री मल्लिकर्जुन खरगे : सर, मैं यही नहीं, बल्कि सारी चीजों को रख देता हूँ।

श्री सभापति : बिल्कुल ठीक है।

श्री मल्लिकर्जुन खरगे : सर, यह कार्यवाही का हिस्सा बन जाएगा।

सर, दूसरी बात यह है कि मैंने मोदी साहब की गारंटी को पढ़ा और मैंने उन सारी चीजों के बारे में बताया कि उसमें किस ढंग से काम चल रहा है। मैं आखिर में दो चीजें बताऊँगा। पहले मैं पॉलिटिकल अपोजिशन के बारे में बताता हूँ। अब अपोजिशन पार्टी से इस सरकार को एलर्जी है। जिसको देखो, उसको अंदर डालो। ईडी, इनकम टैक्स... जिसको अंदर लाओ, उसको वाशिंग मशीन में डालो। उसके बाद वह क्लीन हो जाता है और उसको राज्य सभा में लाया जाता है। दस साल में तोड़-फोड़ के माध्यम से 411 एमएलएज़ इधर से उधर हो गए। सरकारें गिराई गईं, सरकारें बनाई गईं। क्या आपकी यह नीति ठीक है? क्या आप इसको ठीक मानते हैं? ...(व्यवधान)... जो हमारी पार्टी में रहता है, वह करप्ट है और जब वही आपकी पार्टी में जाता है, तो दूसरे ही दिन वह अच्छा बन जाता है।...(व्यवधान)... उसका केस रुक जाता है, निकाला जाता है और उसको प्रोटेक्शन मिलती है। जो आपकी बात नहीं सुनता है, उसको आप जेल भेज देते हैं और जो आपकी बात सुनता है, उसको अपनी पार्टी में मिला लेते हैं - यह आपकी नीति है और आप हमको बोल रहे हैं कि पाठ सिखाते हैं कि डेमोक्रसी को यह करें, वह करें। देखिए, आप सबको पाठ पढ़ाते हैं, लेकिन यह नीति आप ही की है। हम यहाँ पर कुछ बोलते हैं तो उसके

खिलाफ हिन्दू-मुसलमान लाते हैं। आज़ादी से पहले तो आपकी पार्टी ने, जनसंघ ने मुस्लिम लीग के साथ तीन स्टेट्स में गवर्नमेंट बनाई थी। ...(**व्यवधान**)...

श्री पीयूष गोयलः सर, जनसंघ का गठन 1951 में हुआ था। ...(**व्यवधान**)... इनको कुछ जानकारी नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: आप अम्बेडकर की 'Thoughts on Pakistan' पढ़िए और उनकी जो दूसरी किताबें हैं, वे भी पढ़िए, आपको मालूम हो जाएगा।

श्री सभापतिः खरगे जी, प्लीज़। ...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, हमारा इतना बड़ा शरीर है, मगर मैं देख रहा हूँ कि जो मुझसे पतले हैं, आप उनको देख रहे हैं। नेहरू जी के संग्रहालय का नाम बदलने की क्या जरूरत थी? वाजपेयी जी, जो विपक्ष के नेता थे, जब वे प्राइम मिनिस्टर बने और शायद कैबिनेट रूम में या कहीं और गए, तो उन्होंने फौरन स्टाफ को बुलवाया और पूछा कि यहाँ तो नेहरू जी की फोटो लगी हुई थी, वह कहाँ है? तब किसी ने कहा कि सर, अब गवर्नमेंट बदल गई है। इस पर उन्होंने कहा कि गवर्नमेंट बदल गई है तो क्या हुआ, वे तो पहले प्रधान मंत्री हैं, उनकी फोटो लेकर आइए और यहाँ लगाइए। आप कम से कम अटल बिहारी जी की तो सुनिए! ...(**व्यवधान**)... यह बीजेपी नहीं है। बीजेपी है, तोड़-फोड़ सरकार। ...(**व्यवधान**)...

सर, मैं आपको बताता हूँ कि कई बार जब इलेक्शन के वक्त आडवाणी साहब और अटल बिहारी साहब गुलबर्गा आते थे, तो हम अपना रूम छोड़कर, उसको वैकेट करके उनको देते थे, हालांकि तब हम मिनिस्टिर थे। चूंकि उनमें हमारे थोड़े दोस्त थे, जो कि हमारे पहले के क्लासमेट्स थे और वे हमारे पास आकर रिक्वेस्ट करते थे कि आपका तो यहाँ घर है, आप घर जाइए और यह ऐवानशाही छोड़ दीजिए। इसी तरह, चन्द्रशेखर जी की भी कुछ यादें हैं। यहाँ पर उनके बेटे नीरज जी हैं, जो रूठकर बहुत बातें करते हैं। उनके पिताजी और मुझे सन् 1970 में अरेस्ट किया गया था। वीरेन्द्र पाटिल जी, जो कि हमारे घर के बाजू में ही रहते थे, उन्होंने हमें अरेस्ट करवाया था। चन्द्रशेखर जी हमारे यहाँ चार बार आए हैं। तब चन्द्रशेखर, मोहन धारिया, कृष्णकांत और अर्जुन अरोड़ा, ये सब लोग प्रचार के लिए निकले थे। हम लोग मिल-जुल कर बहुत से काम करते थे, जबकि यहां सब दुश्मनी से, हर चीज़ दुश्मनी से -- अगर देश ऐसे चलाने की कोशिश की जाए तो यह really देश और डेमोक्रेसी के लिए ठीक नहीं है।

दूसरी चीज़, आप इस सदन को प्रोटेक्ट करने में भी फेल हो गए। यह तो लोकशाही का टेम्पल है, इसको प्रोटेक्ट करने में भी आप फेल हो गए। सर, मैं आपको बताता हूँ कि हमको जो इन्फॉर्मेशन मिली है, उसके अनुसार जो लोग पकड़े गए हैं, उन्होंने एफिडेविट दिया कि हमें इलेक्ट्रिक करंट लगाकर, मारकर, धमकाकर हमसे कह रहे हैं कि फलां-फलां पार्टी का नाम लो। मैं उन लोगों के बारे में बता रहा हूँ, जो सदन में कूदे थे और उन्होंने यह एफिडेविट दिया है। तो यह है सदन की सुरक्षा! जो लोग जनता से चुनकर आते हैं, जब उनकी सुरक्षा के लिए ऐसा होता है, तो आप याद रखिए कि आप किस-किसको बलि का बकरा बनाना चाहते हैं? दूसरी चीज़,

अब मैं ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता, बल्कि मैंने जो कुछ कहा है, उसका उत्तर हमारे प्रधान मंत्री जी देंगे। खासकर मेरे पिछले पन्नों से जो हमने लिया, रिज़र्वेशन के बारे में, किसानों के बारे में, फिर inflation, unemployment के बारे में लिया, इनके बारे में वे ज़रूर बोलेंगे। मैं अंत में यह भी कहता हूं कि झारखंड की स्थिति क्या है। झारखंड में आपने एक को ईडी के केस में बुलाकर अरेस्ट कर लिया, अरेस्ट करने के बाद उन्होंने रिज़ाइन किया, गवर्नर के पास गए, गवर्नर के पास जाकर अपना राज़ीनामा दिया, जो एक्सेप्ट हुआ। राज़ीनामा एक्सेप्ट होने के बाद वहां 43 लोग बस में बैठे हुए थे, उनके सिगनेचर लेकर दिये गये। तब उन्होंने यह भी नामांकित किया कि चंपई सोरेन को पार्टी की तरफ से लीडर बनाएंगे। आदिवासी नेता देने के बाद भी वहां के गवर्नर बोले कि मैं इस पर सोचता हूं, आपके पास संख्या बल नहीं है। महोदय, वे लोग वहां बस में संख्या बल लेकर बैठे हुए थे। दूसरे दिन फिर वे जाकर मिले और बोले कि हमारे पास पर्याप्त संख्या है। तब उनको बोला गया कि कल आप साढ़े बारह बजे ओथ ले लीजिएगा। फिर बोले कि मैं आपको विश्वास मत साबित करने के लिए 8-10 दिन के बाद की डेट देता हूं। सर, यह अपोज़िशन के लिए है और आप क्या कर रहे हैं? नीतीश कुमार जी ने बिहार में राज़ीनामा दिया, जो 15 मिनट में स्वीकार हुआ, उनको शपथ लेने का समय भी दिया गया, उन्होंने उसी वक्त अपना कैबिनेट भी फॉर्म किया। सर, एक का सब काम आधे घंटे में होता है और यहां एक ही पार्टी का बहुमत होते हुए, एक ही महागठबंधन का बहुमत होते हुए उनके साथ ऐसा होता है। Is this democracy? Is this democracy? यह भी ट्राइबल का आदमी है। रिज़ाइन करने वाला भी ट्राइबल है, शपथ लेने वाला भी ट्राइबल है। यदि आप इस तरह से ट्रीट करेंगे, तो डेमोक्रेसी के ऊपर से लोगों का विश्वास उठ जाएगा। आप बुरा न मानें, तो मैं निश्चित रूप से कहूंगा कि प्रधान मंत्री जी इसे आखिरी इलैक्शन डेक्लेयर करते हैं। इसके बाद इलैक्शन नहीं होंगे। वे बोलेंगे कि मैं इतना popular हो गया हूं, डेमोक्रेसी की ज़रूरत ही नहीं है। इससे यह दिखाई दे रहा है। सर, जो 16 घंटे में पलट मारते हैं, आप लोग उस पलटू राम को सपोर्ट करते हैं। जो सीधे-सीधे आपके पास आता है, उसको आप नकारते हैं, यह ठीक नहीं है। लास्ट में मैं यही कहूंगा कि ईडी, इनकम टैक्स बोल-बोल कर थक गए, वे इसको मानते नहीं हैं, क्योंकि उनके पास डराना ही एकमात्र उपाय है, दूसरा उपाय नहीं है। हम देश का विकास चाहते हैं, उनका ऐसा कहना है। हम भी देश का विकास चाहते हैं। मैं कभी विकास के लिए किसी को discriminate नहीं करता हूं। मैं समझता हूं कि जोशी साहब भी यह मानते हैं। किसी को पूछो या न पूछो, हम हर एक की मदद करते थे। हमारा एम यह है कि अगर डेवलपमेंट हुआ, सड़क बड़ी हुई, तो क्या मेरे ही लोग उस पर चलेंगे? रेल चली, तो क्या मेरे ही लोग उस पर सफर करेंगे, कोई हॉस्पिटल बना तो क्या मेरे ही घर के पेशेंट जाएंगे। अगर यह सोच होगी, तो देश विकसित होगा, नहीं तो मेरा, मेरे लिए और हमारे लिए, इतना ही बोल कर चलेंगे तो सर्वजन-सुखाय कहां होगा? मैं तो यह बोलता हूं कि बहुजन-सुखाय, बहुजन-हिताय की बात करो।

यह तो बुद्ध का कहना है और बुद्ध को ही राम का आठवां अवतार मानते हैं। मुझे सही से मालूम नहीं है। विष्णु का नौवां अवतार मानते हैं। उसका भी कहीं पर नामो-निशान नहीं है। उनका कहीं पर स्तूप नहीं बन रहा है।

डा. सुधांशु त्रिवेदी (उत्तर प्रदेश): राम मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: इसलिए ही बोला। आप नौवें अवतार की पूजा करो। अगर नौवें अवतार की पूजा करेंगे, तो आपके दिमाग में scientific thinking आ जाएगी। मैं कोई टीका-टिप्पणी नहीं कर रहा हूं। आप ठीक बोल रहे हैं। अगर ऐसे लोग ज्यादा बढ़ जाएंगे, तो बीजेपी ठीक हो जाएगी। सर, मैं आखिरी बात कहना चाहता हूं कि गरीब और कमजोर तबकों को न्याय मिले, यह हमारी नीति है, जिस पर हम चलते रहेंगे। आप कितनी भी उपेक्षा करें, हम यह सवाल उठाते रहेंगे। आखिर में मैं यह कहूंगा -

'मेरा हर लफ्ज है अमन के लिए
मेरी हर सांस बंदगी के लिए
मैं हवा के खिलाफ चलता हूं
सिर्फ इंसान की खुशी के लिए।'

मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं, क्योंकि आपने इस बार मुझे शांति से सुना।

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Sukhendu Sekhar Ray.

SHRI SUKHENDU SEKHAR RAY (West Bengal): Sir, as per the List of Business, at 3.30 p.m., the Private Members' Legislative Business will be taken up. So, only three minutes are left. My Party has allotted me 24 minutes. So, kindly allow me to speak on Monday.

MR. CHAIRMAN: I think it is fair enough.

SHRI SUKHENDU SEKHAR RAY: Sir, it cannot be a truncated speech.

MR. CHAIRMAN: No, no; it is fair enough, very reasonable. As usual, you are very reasonable. I was thinking that if Kharge*ji* could have taken another few minutes, the time of his Party would have been over. But he has left about seven-eight minutes for others.

श्री प्रमोद तिवारीः एलओपी के बोलने का टाइम अलग है और पार्टी का टाइम अलग है। आप एलओपी के टाइम को पार्टी के टाइम से अलग करें। एलओपी को बोलने का अधिकार है, लीडर को बोलने का अधिकार है।

MR. CHAIRMAN: How many times will I have to decide?

श्री प्रमोद तिवारी : सर, इसको पार्टी टाइम से बाहर रखिए।